12

Vol. IX
Number-9

ISSN 2277-2405
(Special Issue) January 2018

UGC No.-64522

EDUCATION PLUS

A Multidisciplinary International Peer Reviewed/Refereed Journal

APH PUBLISHING CORPORATION

Off. Principal
Late. N.P.W. College
Lakhani, Distt. Bhandara

Late N.P.W. College Lakhani
Ref. No.
Dt.
Distt. Bhandara

आधुनिक भारत में वृध्दों की समस्याएं

डॉ. अनुराधा एम. खाडे*

प्रस्तावना

आज के आधुनिक युग मे वृदधों की समस्या बड़े पैमाने पर सामने आ रही हैं। भारत मे १६ वी शताब्दी मे की समस्या नहीं थी लेकीन २० वी शताब्दी में यह बड़े स्वरूप में सामने आने लगी इसका कारण है अपनी बदलती सामाजीक और आर्थिक परिस्थिती। भारत में जब औद्योगीकरण, नागरीकरण और आधुनिकीकरण इन सब घाटको का प्रभाव अपने परिवारसंस्था और विवाहसंस्था पर पड़ता है और इसी वजह से वृद्धों की समस्या का निर्माण होता है।

बुढ़ापा आमतौर पर किसी व्यक्ति के जीवन चक्र का उत्तर होता है। भारत में समग्र जीवन प्रत्याशा, सेवानिवृत्ति की आयु, पारिवारिक परिस्थितियों, भौतिक वातावरण को ध्यान में रखते हुए। 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों को वृद्ध कहा जाता है वृद्धावस्था व्यक्ति और समाज से जुड़ी एक अवधारणा है।

बुजुर्गों की सामाजिक समस्याओं के कारण भारतीय समाज की उम्र बढ़ने के लिए कई कारक जिम्मेदार हैं। सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन सामाजिक संस्थाओं की भूमिका में परिवर्तन जीवन शैली ,बढ़ती उम्र की समस्याओं के प्रमुख कारण इस प्रकार हैं।

1. संयुक्त पारिवार का विघटन
2. ग्रामीण जीवन शैली में परिवर्तन
3. औद्योगिक अर्थव्यवस्था और शहरीकरण
4. अतिरिक्त जनसंख्या वृद्धि
5. नए सामाजिक मूल्य
6. व्यक्तिगत परिप्रेक्ष्य/व्यक्तिगत स्वतंत्रता के 7.विचार सीमित आय
8. आवास में अपर्याप्त स्थान
9. जीवनसाथी की मृत्यु

वृद्धो की समस्याएं

मानव मे वृद्धावस्था यह अपरिहार्य अवस्था है वृद्धावस्था मे शारीरीक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक ऐसी अनेक समस्या निर्माण होती है। जीस तर्हा से छोटा बच्चा अपने माता–पीता पर निर्भर रहता है उसी प्रकार से वृद्ध लोग यह तरुण और कर्ते लोगों पर निर्भर रहते है। अभी इस तरुण मंडळी को वृद्धों पर ध्यान देने के लीये वक्त ही नहीं रहता यह तरुण लोग वृदधों की भावनाओं को जानने का प्रयास ही नहीं करते। उनको

*समाजशास्त्र विभागाध्यक्ष, स्व.नि.पा.वाघाये महाविद्यालय, लाखणी, जि. भंडारा।

Off. Principal
Late N.P.W. College
Lakhani. Distt. Bhandara
Late N.P.W. College, Lakhani
Ref No.....
Dt.
Distt. Bhandara

पहीले जैसा मानसन्मान परिवार में नहीं मिलता इस भावना से वृद्धो मे अलिप्तता और एकाकी रहने की भावना निर्माण होती है उनसे अनेक समस्यायें निर्माण होती है।

1. **शारीरिक समस्याएं :-** वृद्धावस्था में व्यक्ति के शरीर में अनेक शारीरिक एवं जैविक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। शारीरिक परिवर्तन आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार के होते हैं। बाह्य रूप से, यह देखना आसान है कि कोई व्यक्ति बूढ़ा है या जवान। इस उम्र में शारीरिक अंगों के कमजोर होने से व्यक्ति रोग का शिकार हो जाता है।
2. **मानसिक समस्या :-** शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति की मानसिक स्थिति भी कमजोर हो जाती है, उसका दिमाग स्वस्थ होता है, इसलिए बूढ़ापे में शारीरिक परिवर्तन के साथ–साथ मानसिक परिवर्तन भी स्वाभाविक है।
3. **आर्थिक समस्या :-** वृद्धावस्था में तन–मन की थकावट के कारण लोग इस कार्य में निवृत्त हो जाते हैं। उनका आर्थिक लाभ काट दिया गया। सेवानिवृत्ति के दौरान शादी करने, घर बनाने आदि में पैसे खर्च होते हैं। सेवानिवृत्ति परिवार के खर्चों को कवर नहीं कर सकती। ऐसे में बुजुर्गों को आर्थिक परेशानी होती है।
4. **सामाजिक समस्याएं :-** वृद्धावस्था में व्यक्ति सेवानिवृत्त हो जाता है। कम आय बुजुर्गों के लिए अपनी जरूरतों को नियंत्रित करना मुश्किल बना देती है। इस दौरान औषधीय पानी की जरूरत बढ़ गई है। वृद्धावस्था से पहले समाज में उन्हें अलग दर्जा और प्रतिष्ठा नहीं मिलने से उनका दिमाग हीन हो जाता है और सामाजिक समस्याएं पैदा हो जाती हैं।
5. **पारिवारिक समस्याएं :-** बुजुर्गों की समस्या की प्रकृति पारिवारिक वातावरण से संबंधित है। व्यक्ति मृत्युपर्यन्त पारिवारिक कलह से मुक्त नहीं होता। बच्चों की शिक्षा, विवाह, आवास, स्वास्थ्य आदि।
6. **लकवा की समस्या :-** बुढ़ापा लकवा की अवस्था है। बुजुर्ग लोग भी अपने छोटे बच्चों या मंडली पर निर्भर होते हैं। एक बुजुर्ग व्यक्ति शारीरिक, मानसिक और आर्थिक विकारों के कारण लकवाग्रस्त हो जाता है।
7. **समायोजन की समस्याएं :-** वृद्धावस्था में शारीरिक अक्षमता, परिवार में द्वितीयक स्थिति, वृद्धों के प्रति युवा पीढ़ी के बदलते दृष्टिकोण आदि के कारण बुजुर्गों का सामाजिक समूह से अलगाव या अलगाव बढ़ जाता है और उनके क्षेत्र को सीमित कर दिया जाता है। सामाजिक संपर्क। कल तक यह परिवार के मुखिया के रूप में कर्ता के पद से गिर रहा था। जो व्यक्ति कल तक ऊँचे पद पर रहा है, वह निवृत्ति के कारण बहुत ही साधारण व्यक्ति बन जाता है।

वुजुर्ग कल्याण कार्यक्रम

वृद्धजनों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए जो मानव जीवन में अपरिहार्य हैं, उन्नीसवीं शताब्दी से ही वृद्ध कल्याण कार्यक्रम चलाये जाते रहे हैं। आजादी के बाद भारत सरकार ने कई कानून बनाए। संविधान के अनुच्छेद 41 के अनुसार, राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने बुजुर्ग, बीमार और विकलांग नागरिकों को सहायता प्रदान करने का प्रावधान किया है। 1996 के मेडल ऑफ कॉन्क्वेस्ट के अनुसार, सभी को अपने

Off. Principal
Late. N.P.W. College
Lakhani, Distt. Bhandara

Late N.P.W. College, Lakhani Distt. Bhandara
Ref No.....
Dt.

बुजुर्ग या बीमार माता–पिता की देखभाल करने की आवश्यकता है। बुजुर्गों के कल्याण के लिए कई पहल शुरू की गई हैं जैसे वृद्धाश्रम, बुजुर्गों के लिए डे सेंटर, होम केयर सिस्टम पेंशन, भविष्य निर्वाह निधि, वृद्ध ावस्था पेंशन आदि।

1. **वृद्धाश्रम श्ओल्ड एज होमः-** वृद्धावस्था कल्याण कार्यक्रम में एक अभिनव संगठन है। वृद्धाश्रम को वर्तमान समय की आवश्यक आवश्यकताओं में से एक माना जाता है। इसलिए वृद्धाश्रम की अवधारणा अब आम हो गई है।
   वृद्धों को हर प्रकार की सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से वृद्धाश्रम की स्थापना की गई है।
2. **बुजुर्गों के लिए दिन केंद्रः-** बुजुर्गों के लिए दिन केंद्र भी 20वीं सदी का नवाचार और पहल है। वृद्ध ाश्रम ही वृद्धावस्था की सभी समस्याओं का समाधान करने का एकमात्र या पर्याप्त साधन नहीं है। वृद्धाश्रम बुजुर्गों को सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। उनके स्वास्थ्य और दवा का ध्यान रखा जाता है लेकिन उन्हें जिस प्यार और सहानुभूति की जरूरत होती है, वह वृद्धाश्रम से नहीं मिल सकती। साथ ही आप वृद्धाश्रम के कर्मचारियों से भी अपेक्षा करते हैं
   आधुनिक भारत में बुजुर्गों की समस्याओं का एक अध्ययन नहीं आना है। बुजुर्गों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने और उन्हें अपने पारिवारिक सुख को खोने से रोकने के दोहरे उद्देश्य के साथ दिनकांद्रे बुजुर्गों के लिए एक अभिनव पहल बन गई है।
3. **वृद्धावस्था सेवानिवृत्ति वेतनः-** भारत में संगठित क्षेत्र में कई सेवा सेवानिवृत्त लोगों को सेवानिवृत्ति वेतन मिलता है। लेकिन असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों, खेतिहर मजदूरों को उनकी सेवानिवृत्ति के बाद आर्थिक मदद मिलनी चाहिए और भारत में वृद्धावस्था की समस्या को हल करने के लिए वृद्धावस्था पेंशन का प्रावधान किया गया।
4. **सेवानिवृत्ति वेतन और भविष्य निर्वाह निधिः-** लंबे समय से काम करने वाले निकाय को एक दिन सेवानिवृत्त होना है। बुजुर्गों पर आर्थिक निर्भरता को खत्म करने की दृष्टि से सेवानिवृत्ति वेतन, भविष्य निर्वाह निधि का विशेष महत्व है।
5. **अन्य रियायतें बुजुर्गों** को शारीरिक रियायतें घोषित करते समय उन्हें वरिष्ठ नागरिक कहा जाता है।65 वर्ष से अधिक आयु के नागरिक वरिष्ठ नागरिक हैं। महाराष्ट्र सरकार ने 1 जनवरी, 1996 से वरिष्ठ नागरिकों के लिए वीटी की शुरुआत की है। किराए पर 50: की छूट की शुरुआत की। जीवन अक्षय योजना जैसी जीवन बीमा योजनाएं आयुर्वेद निगम द्वारा इंडियन एयरलाइंस के विमान किराए पर 50: छूट के साथ लागू की जाती हैं। बुजुर्गों को विशेष स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाती हैं। निःशुल्क स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं प्रदान की जाती हैं। रियायतें दी जाती हैं।

निष्कर्ष

1. वृद्ध लोगों को परिवार, समाज और आर्थिक रूप से मदद नहीं मिलती है।
2. बुजुर्गों के साथ मानवाधिकारों के आधार पर भेदभाव किया जाता है।
3. वृद्ध व्यक्ति सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक मामलों में पंगु हो जाता है।

Off. Principal
Late. N.P.W. College
Lakhani, Distt. Bhandara

Late N.P.W. College, Lakhani Dist. Bhandara (M.S.)

4. बुजुर्गों को सम्मान और सम्मान के साथ जीने का अधिकार नहीं है।
5. वृद्ध व्यक्ति के प्रति समाज का रवैया प्रतिकूल है।
6. वृद्ध व्यक्ति के परिवार और समाज में कोई समायोजन नहीं होता है।
7. वृद्धों को अनेक रोगों से पीड़ित होना पड़ता है।
8. वृद्ध व्यक्ति शारीरिक और मानसिक रूप से थका हुआ है।
9. वृद्ध व्यक्ति सरकारी योजना से असंतुष्ट है।
10. बुज़ुर्गों के शारीरिक गठन में कई अंतर होते हैं।

ग्रंथ सूची

1. विद्याभूषण, डी. आर. सचदेवा, समाजशास्त्र के सिध्दांत, किताब महल, नई दिल्ली १९७६
2. शिवबहाल सिंह, विकास का समाजशास्त्र, रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, २०१०(टी. बी. बोटोमोर (अनुवादक गोपाल प्रधान) समाजशास्त्र समस्याओं और साहित्य का अध्ययन)
3. डॉ. बी. राम, कराडे भारतीय समाज प्रश्न आणि समस्या, पिंपलापुरे दण्ड के पब्लिशर्स, नागपूर, २००६)
4. टी. बी. बोटोमोरे (अनुवादक गोपाल प्रधान) समाजशास्त्र (समस्या आणि साहित्याचा अभ्यास) ग्रंथ शिल्पी, प्रा.लि.बी–7 दिल्ली, २००४

Off. Principal
Late. N.P.W. College
Distt. Bhandara

Late N.P.W. College, Lakhani
Ref No.
Dt.
Distt. Bhandara